राष्ट्रीय संगोष्ठी

"इक्कीसवीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श"

09 फरवरी 2024

पंजीयन प्रपत्र

नाम ....

पदनाम ....

संस्था ....

....

जन्मतिथि ....

पता ....

....

मोबाईल ....

ई-मेल ....

शोध पत्र/आलेख का शीर्षक ....

....

पंजीयन शुल्क ....नकद/बैंक ड्राफ्ट

बैंक ड्राफ्ट नं. ....दिनांक ....

बैंक का नाम ....

दिनांक : .... हस्ताक्षर

(इस प्रपत्र की छायाप्रति मान्य है)

सलाहकार समिति

डॉ. विनय कुमार पाठक,
राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष

श्री मदनमोहन अग्रवाल,
राष्ट्रीय महामंत्री

श्री राजेन्द्र अग्रवाल 'राजू',
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

आयोजन समिति

संरक्षक
डॉ. एस.एल.निराला (प्राचार्य)
शास.जे.पी.वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

संयोजक
डॉ. जयश्री शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - हिन्दी

सह-संयोजक
डॉ. परमजीत पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

सदस्य संयोजक
डॉ. मंजुला पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

आयोजन सचिव
डॉ. फेदोरा बरवा
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

आयोजन सह सचिव
श्रीमती चैताली सलूजा
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

आमंत्रण

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"इक्कीसवीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श"

09 फरवरी 2024

आयोजक

हिन्दी विभाग

शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

-: प्रेरक :-

अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद
बिलासपुर (छ.ग.)

-: कार्यक्रम स्थल :-

सभागृह (कक्ष क्र. 30)
शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

आमंत्रण

मान्यवर,

सादर अभिवादन एवं अत्यंत हर्ष के साथ आपको सूचित किया जाता है कि हिंदी विभाग, शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर (छ ग.) द्वारा ''इक्कीसवीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श'' विषय पर राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस शोध संगोष्ठी में आप सभी प्राध्यापक, शिक्षाविद, शोधार्थी व विद्यार्थी सादर आमंत्रित हैं।

महाविद्यालय परिचय :- छत्तीसगढ़ की पावन भूमि पर स्थित शास. जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना सन् १९४४ में हुई थी। इस महाविद्यालय में तीन हजार तीन सौ छात्र- छात्राएं अध्ययनरत हैं। अटल बिहारी वाजपेयी वि.वि. बिलासपुर से सम्बद्धता प्राप्त इस महाविद्यालय में १८ विभाग है जिनमें से अधिकांश स्नातकोत्तर एवं शोध केन्द्र भी है। कॉलेज कैम्पस में ग्रंथालय, क्रीड़ा विभाग, प्रयोगशाला एवं वाई-फाई सुविधाएं उपलब्ध है। अकादमिक उत्कृष्टता के लिए यह शिक्षा संस्थान विख्यात है। बिलासपुर शहर सड़क मार्ग, रेलमार्ग एवं वायुमार्ग से जुड़ा हुआ है।

संगोष्ठी की भूमिका :- हाशिए के समाज को मुख्य धारा में लाने का प्रयास 'विमर्श' का गंतव्य-मंतव्य रहा है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के दस्तक के साथ बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद की नींव रखी गयी। इसमें विकलांगों के पुनर्वास और समग्र विकास को लेकर डॉ. द्वारिका प्रसाद अग्रवाल ने १२१ योजनाओं की संकल्पना की। इस तरह स्त्री, दलित, आदिवासी विमर्श के बाद विकलांग-विमर्श को गति मिली। डॉ. अग्रवाल के इस विमर्श के पुरोधा और डॉ. विनय कुमार पाठक प्रवर्तक प्रमाणित हुए। परिषद् द्वारा विकलांग-विमर्श पर साहित्य के प्रकाशन के समानांतर दस राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुई। इसी कड़ी में बारहवीं संगोष्ठी ''इक्कीसवीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श' का आयोजन किया जा रहा है।

संगोष्ठी के उपविषय :-

१. विकलांगता : आशय और अवधारणा
२. विकलांगता के प्रकार
३. विकलांगता : अभिशाप या वरदान
४. विकलांगता और प्रजातंत्र
५. विकलांगों के लिए राष्ट्रीय नीति
६. विकलांगों के कानूनी अधिकार
७. विमर्श : आशय और अवधारणा
८. हिन्दी साहित्य में विमर्श की परम्परा
९. विकलांग-विमर्श की प्रासंगिकता
१०. साहित्य में विकलांगता
११. संस्कृत साहित्य में विकलांगता
१२. भारतीय भाषाओं में विकलांगता
१३. हिन्दी की लोकभाषाओं और बोलियों में विकलांगता
१४. लोकसाहित्य में विकलांगता
१५. हिन्दी काव्य और विकलांग-विमर्श
१६. हिन्दी कहानी और विकलांग-विमर्श
१७. हिन्दी उपन्यास और विकलांग-विमर्श
१८. हिन्दी नाटक और विकलांग-विमर्श
१९. हिन्दी आत्मकथा, संस्मरण और विकलांग-विमर्श
२०. हिन्दी सिनेमा और विकलांग-विमर्श
२१. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और विकलांगता

इसके अतिरिक्त भी संबंधित उपविषयों पर भी आप शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं।

शोध पत्र आमंत्रण

संगोष्ठी के विषयों/उपविषयों पर आधारित शोध पत्र आमंत्रित है। चुने हुए शोध पत्रों को ISBN के साथ संदर्भ ग्रंथ के रूप में संपादित कर प्रकाशित किया जायेगा। शब्द सीमा 3000 से अधिक न रहे। शोध पत्र कृतिदेव 10 फाण्ट साइज 12 में टाइप किया हुआ 30 ~~दिसम्बर 2023~~ जनवरी 2025 तक निम्न पते पर भेज सकते हैं।

ई-मेल :- *jpvcollegehindi@gmail.com*

पंजीयन शुल्क :

क्र.	विवरण	शुल्क
1.	प्राध्यापक शिक्षाविद	500/-
2.	शोधार्थी	200/-

संपर्क सूत्र -

8319604968, 9424166516,
9424169406, 9039771619

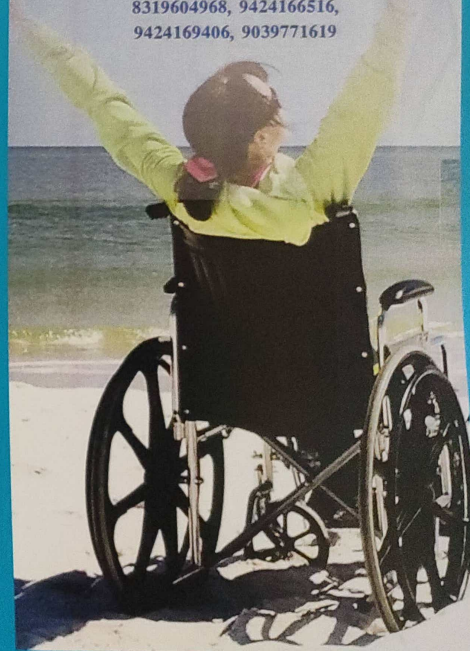

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बिलासपुर (छ.ग.) फोन / फैक्स नं.—07752.228225

दिनांक 09.02.2024

'राष्ट्रीय संगोष्ठी'

'इक्कीसवीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग—विमर्श'

हाशिए के समाज को मुख्य धारा में लाने का प्रयास 'विमर्श' का गंतव्य—मंतव्य रहा है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के दस्तक के साथ बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् की नींव रखी गयी। इसमें [illegible] विकलांगों के पुनर्वास और समग्र विकास को लेकर डॉ. द्वारिका प्रसाद अग्रवाल ने 129 योजनाओं की संकल्पना की। इस तरह स्त्री, दलित, आदिवासी विमर्श के बाद विकलांग—विमर्श को गति मिली। डॉ. अग्रवाल इस विमर्श के पुरोधा और डॉ. विनय कुमार पाठक प्रवर्तक प्रमाणित हुए। परिषद् द्वारा विकलांग—विमर्श पर साहित्य के प्रकाशन के समान्तर दस राष्ट्रीय और एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुई। इसी कड़ी में बारहवीं संगोष्ठी ''इक्कीसवीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग—विमर्श' का आयोजन किया जा रहा है।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में महाविद्यालय परिवार ने सहभागिता की।

क्र.	प्राध्यापक / सहा.प्राध्यापक का नाम	विषय / विभाग	हस्ताक्षर
1)	डॉ. गीता रा. चोडमणी	हिंदी, शिवाजी विश्वविद्यालय	[illegible]
2)	डा. सीमा भट्टाचार्या	डी. पी. एस (कोटापुर बिलासपुर)	[illegible]
3	डॉ. राघवेन्द्र कुमार दुबे	प्रांतीय अध्यक्ष तुलसी साहित्य अकादमी	राघवेन्द्र
4.	डॉ. राजकुमार सच्चिदेव	सहा. प्रा. हिन्दी	[illegible]
5.	वेदप्रकाश अग्रवाल	स्वामी विवेकानन्द शिक्षण केन्द्र बिलासपुर	[illegible]
6	डी. पी. गुप्ता	अ.भा.वि.चे. परिषद	[illegible]
7	रवीन्द्र अग्रवाल 'राष्ट्र'	-do-	[illegible]
8	बजरंग अग्रवाल अकलतरा		Agrawal
9)	डॉ. मंजुश्री वेदुला		मंजुश्री
10	डॉ. अनिता सिंह	महाराणा प्रताप महाविद्यालय उसलापुर बिलासपुर (प्राचार्य)	[illegible]
11	मो. सलीम	शिक्षा विभाग	[illegible]
12	डॉ. प्रदीप निर्णेजक	शिक्षा विभाग	प्रदीप

13.	एस. विश्वनाथ रव	साहित्यकार	[signature]
14	नित्यानंद अग्रवाल	अखि. विश्वमंगल चेतना परिषद	[signature]
15.	बालगोविन्द अग्रवाल	साहित्यकार	[signature]
16.	डॉ. आभा गुप्ता	साहित्यकार	Abha
17.	शुभा भौमिक		[signature]
18	Dr. Kaveri Dabhadkar	Asstt. Professor Govt. Bilasa Girls P.G. College Bilaspur (C.G.)	[signature] 9/2/24
19	डॉ० ए० के० यदु	साहित्यकार	[signature] 9/2/24
20	आस्था यादव	शोधार्थी	[signature]
21	डॉ आस्था दीवान	सहायक प्राध्यापक	[signature]
22	अनिल पटेल	शोधार्थी	[signature]
23	अनिता अंचल	व्याख्याता (अंग्रेजी)	[signature]
24	[illegible]	[illegible]	[signature]
25	डॉ मीनू बरसैंया		[signature]
26	Dr. Shraddha Dubey	Asstt. Prof. Govt. Mahamaya college Ratanpur	[signature]
27	डॉ. सुनील कुमार शर्मा	सहा. प्राध्यापक	[signature]
28	Dr. S.K. Dubey	Professor in Geog.	[signature]
29	डॉ. के. के. भण्डारी	प्राध्यापक	[signature]
30	डॉ० ए० तिर्की	सहा० प्राध्यापक	[signature]
31	[illegible] पटेल	सहा० प्राध्यापक	[signature]
32	कौशल प्रसाद बांधे	अतिथि व्याख्याता (इतिहास)	[signature]
33	डॉ० धर्मेन्द्र महिलांग	Lab Teacher	[signature]
34	श्री श्रीनिवास [illegible]	वरि. साहित्यकार	[signature]
35	सीमा टंडन	पत्रकार शोधार्थी	[signature]
36	रतिराम गेंड्वाल	शोधार्थी	[signature]
37	डॉ० किरण राठौर	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक-हिंदी केन्द्रीय विद्यालय बिलासपुर	[signature] 09/2/24
38	डॉ. दीपशिखा शुक्ला	प्रोफेसर, शा.कन्या महा. विद्यालय	[signature]
39	भारती यादव 'मेधा'	लेखक	[signature]
40	Dr. Sangita Banafar	writer	[signature]
41	Dr. Sangita Parmanand	साहित्यकार विमर्शक	[signature]
42	Dr Samita Pomray	सहा. प्राध्यापक कथाकार	[signature]

43.	डॉ. नंदिनी तिवारी	प्राध्यापक हिंदी शा. बिलासा कन्या स्नातको महा. बिलासपुर (छ.ग.)	[signature]
44.	डॉ. अंजलि शर्मा	प्राध्यापक (हिन्दी) शास. बिलासा कन्या स्नातको. महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)	[signature]
45.	डॉ० हेमन्त पाल घृतलहरे	सहा० प्रा० हिन्दी शास० बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महावि० बिलासपुर (छ.ग.)	[signature]
46	डॉ. संगीता बंबारा	अतिथि प्राध्यापक हिन्दी शास. ठाकुर शोभा सिंह कला एवं विज्ञान महाविद्यालय पत्थलगांव जिला जशपुर छ.ग.	[signature] 9/8/2024

राष्ट्रीय संगोष्ठी
"इक्कीसवीं सदी का
अस्मितामूलक विकलांग विमर्श"

अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

समाज में विकलांगों को स्वावलंबी बनाने पर जोर

बिलासपुर। जमुना प्रसाद वर्मा शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय बिलासपुर में इक्कीसवीं सदी का 'अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्रख्यात समीक्षक डा.सुंधाशु शुक्ला प्राध्यापक हंसराज कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय के मुख्य आतिथ्य, डा.श्याम लाल निराला प्राचार्य निराला की अध्यक्षता तथा डा. विनय कुमार पाठक कुलपति, थावे विद्यापीठ गोपालगंज (बिहार), डा.सुरेश महेश्वरी व्यंगालोचक (महाराष्ट्र), डा.रामशंकर भारती समीक्षक व कथाकार (झाँसी) के विशेष आतिथ्य में उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर डा. ए.के.यदु द्वारा संपादित 'विकलांग-विमर्श:मानवता का उत्कर्ष', डा.अनिता सिंह द्वारा लिखित विकलांगतापरक उपन्यास 'स्वीकरण', डा. विनय कुमार पाठक कृत 'विकलांग विमर्श: दशा और दिशा' का डा.गीता दोड़मणी का मराठी में अनुवादित ग्रंथ तथा डा.रामशंकर भारती द्वारा लिखित 'डा. विनय कुमार पाठक और इक्कीसवीं सदी के विमर्श' का विमोचन किया गया। अपना बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात विमर्शकार डा. विनय कुमार पाठक ने कहा कि आज अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श राष्ट्रीय चिंतन और चेतना का मूल विषय बन गया है। जिसके चलते इक्कीसवीं सदी में विकलांगतापरक चिंतन विशुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण के रूप में स्थापित हो रहा है। समारोह के मुख्य अतिथि डा. सुधाँशु कुमार शुक्ला ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि यह सुखद स्थिति है कि अब भारत के उत्कृष्ट पुनर्निर्माण में

अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श समाहित है। विशिष्ट अतिथि समीक्षक डा.सुरेश महेश्वरी ने अस्मितामूलक अवधारणा पर चर्चा की। डा. रामशंकर भारती ने समाज में विकलांगों को स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया। सभा की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य डा. एसएल निराला ने अस्मितामूलक विकलांग-विमर्श को पाठ्यक्रम में समाहित करने आवश्यकता बताई। पं. सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. राजकुमार सत्यदेव ने कहा कि अस्मितामूलक विकलांग - विमर्श समाज के सहयोग से ही संभव है। संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता न्यायमूर्ति चंद्रभूषण वाजपेयी ने कहा कि विकलांगता के प्रति प्रचलित भ्रांतियों दैवी अभिशाप, अंधविश्वास आदि को नष्ट करने के लिए सामाजिक चेतना जाग्रत करने की आवश्यकता है। डा. मंजुश्री वेदुला ने कहा विकलांगता अभिशाप नहीं चुनौती है। डा. एके यदु ने विकलांगों को समान अधिकार मिलने की आवश्यकता बताई। विकलांगतापरकपरक उपन्यासों की लेखिका डा.अनिता सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि विकलांगों के लिए सामाजिक सौहार्द की दरकार है। इसके अतिरिक्त अन्य वक्ताओं व शोधकर्ताओं में संगीता टंडन, कृष्णा यादव, डा.आभा गुप्ता, डा, संगीता बनाफर, डा.राघवेंद्र कुमार दुबे, आशीष श्रीवास आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में अनेक प्रदेशों आए शोधार्थियों ने शोधपत्र वाचन किये।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ सरस्वती पूजन व अतिथियों के सम्मान अलंकरण से हुआ। विदुषी डा.जयश्री शुक्ल ने अतिथियों का परिचय कराते हुए संगोष्ठी के औचित्य पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय चेतना परिषद बिलासपुर के महामंत्री मदनमोहन अग्रवाल ने परिषद की विकलांगता के क्षेत्र में की जा रही गतिविधियों पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी का सफल संचालन डा. फेदोरा बरवा ने किया तथा डा. परमजीत पाण्डेय ने संगोष्ठी में पधारे अतिथियों व विद्वानों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डीपी गुप्ता, बालगोविंद अग्रवाल, नित्यानंद अग्रवाल, बजरंग लाल अग्रवाल, यस.विश्वनाथ राव, केके भण्डारी, डा. मंजुला पाण्डेय, चैफाली तलुजा सहित महाविद्यालय के प्राध्यापकगण, विधार्थी तथा शोधकर्ता उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर
बिलासपुर भास्कर 12-02-2024

संगोष्ठी • जेपी वर्मा कॉलेज में हुई एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला, पुस्तकों का विमोचन भी किया गया

दिव्यांगता अभिशाप नहीं चुनौती है, इन्हें सामाजिक सौहार्द्र की जरूरत

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

जेपी वर्मा कॉलेज में 21वीं सदी का अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। इसमें मुख्य अतिथि हंसराज कॉलेज दिल्ली विवि के प्राध्यापक व समीक्षक डॉ. सुधांशु शुक्ला रहे। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. एसएल निराला ने किया। विशिष्ट अतिथि छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक, महाराष्ट्र के डॉ. सुरेश महेश्वरी, कथाकार डॉ. रामशंकर भारती रहे। डॉ. जयश्री शुक्ल ने अतिथियों का परिचय कराते हुए संगोष्ठी के औचित्य पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय चेतना परिषद बिलासपुर के महामंत्री मदनमोहन अग्रवाल ने परिषद की विक्लांगता के क्षेत्र में की जा रही गतिविधियों के बारे में बताया। मुख्य अतिथि डॉ. शुक्ला ने कहा कि यह सुखद स्थिति है कि अब भारत के उत्कृष्ट पुनर्निर्माण में अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श समाहित है। ओयू के पूर्व कुलसचिव डॉ. राजकुमार सत्यदेव ने कहा कि अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श समाज के सहयोग से ही संभव है। डॉ. पाठक ने कहा कि आज अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श राष्ट्रीय चिंतन और चेतना का मूल विषय बन गया है। जिसके चलते 21वीं सदी में विक्लांगता-परक चिंतन विशुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण के रूप में स्थापित हो रहा है। समीक्षक डॉ. महेश्वरी ने अस्मिता-मूलक अवधारणा पर चर्चा की। डॉ. रामशंकर ने समाज में दिव्यांगों को स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया। प्राचार्य डॉ. निराला ने अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श को पाठ्यक्रम में समाहित करने की बात कही। वहीं शोधकर्ता में संगीता टंडन, कृष्णा यादव, डॉ. आभा गुप्ता, डॉ. संगीता बनाफर, डॉ. राघवेंद्र कुमार दुबे, आशीष श्रीवास आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया।

जेपी वर्मा कॉलेज में हुई कार्यशाला में पुस्तकों का विमोचन करते अतिथि।

सामाजिक चेतना जागृत करने की आवश्यकता है: न्यायमूर्ति वाजपेयी

वक्ता न्यायमूर्ति चंद्रभूषण वाजपेयी ने कहा कि विक्लांगता के प्रति प्रचलित भ्रांतियों, दैवी अभिशाप, अंधविश्वास आदि को नष्ट करने के लिए सामाजिक चेतना जागृत करने की आवश्यकता है। डॉ. मंजुश्री वेदुला ने कहा विक्लांगता अभिशाप नहीं चुनौती है। डॉ. यदु ने विक्लांगों को समान अधिकार मिलने की आवश्यकता बताई। डॉ. अनिता सिंह ने कहा कि विक्लांगों के लिए सामाजिक सौहार्द्र की दरकार है।

इन पुस्तकों का किया गया विमोचन

डॉ. एके यदु द्वारा संपादित विक्लांग-विमर्श, मानवता का उत्कर्ष और डॉ. अनिता सिंह द्वारा लिखित विक्लांगता परक उपन्यास स्वीकरण, डॉ. विनय कुमार पाठक कृत विक्लांग विमर्श: दशा और दिशा का डॉ. गीता दोड़मणी का मराठी में अनुवादित ग्रंथ और डॉ. रामशंकर भारती की डॉ. विनय कुमार पाठक और इक्कीसवीं सदी के विमर्श का विमोचन किया गया।

दैनिक भास्कर
बिलासपुर भास्कर 12-02-2024

संगोष्ठी • जेपी वर्मा कॉलेज में हुई एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला, पुस्तकों का विमोचन भी किया गया

दिव्यांगता अभिशाप नहीं चुनौती है, इन्हें सामाजिक सौहार्द्र की जरूरत

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

जेपी वर्मा कॉलेज में 21वीं सदी का अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। इसमें मुख्य अतिथि हंसराज कॉलेज दिल्ली विवि के प्राध्यापक व समीक्षक डॉ. सुधांशु शुक्ला रहे। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. एसएल निराला ने किया। विशिष्ट अतिथि छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक, महाराष्ट्र के डॉ. सुरेश महेश्वरी, कथाकार डॉ. रामशंकर भारती रहे। डॉ. जयश्री शुक्ल ने अतिथियों का परिचय कराते हुए संगोष्ठी के औचित्य पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय चेतना परिषद बिलासपुर के महामंत्री मदनमोहन अग्रवाल ने परिषद की विक्लांगता के क्षेत्र में की जा रही गतिविधियों के बारे में बताया। मुख्य अतिथि डॉ. शुक्ला ने कहा कि यह सुखद स्थिति है कि अब भारत के उत्कृष्ट पुनर्निर्माण में अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श समाहित है। ओयू के पूर्व कुलसचिव डॉ. राजकुमार सत्यदेव ने कहा कि अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श समाज के सहयोग से ही संभव है। डॉ. पाठक ने कहा कि आज अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श राष्ट्रीय चिंतन और चेतना का मूल विषय बन गया है। जिसके चलते 21वीं सदी में विक्लांगता-परक चिंतन विशुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण के रूप में स्थापित हो रहा है। समीक्षक डॉ. महेश्वरी ने अस्मिता-मूलक अवधारणा पर चर्चा की। डॉ. रामशंकर ने समाज में दिव्यांगों को स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया। प्राचार्य डॉ. निराला ने अस्मिता-मूलक विक्लांग-विमर्श को पाठ्यक्रम में समाहित करने की बात कही। वहीं शोधकर्ता में संगीता टंडन, कृष्णा यादव, डॉ. आभा गुप्ता, डॉ. संगीता बनाफर, डॉ. राघवेंद्र कुमार दुबे, आशीष श्रीवास आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया।

जेपी वर्मा कॉलेज में हुई कार्यशाला में पुस्तकों का विमोचन करते अतिथि।

सामाजिक चेतना जागृत करने की आवश्यकता है: न्यायमूर्ति वाजपेयी

वक्ता न्यायमूर्ति चंद्रभूषण वाजपेयी ने कहा कि विक्लांगता के प्रति प्रचलित भ्रांतियों, दैवी अभिशाप, अंधविश्वास आदि को नष्ट करने के लिए सामाजिक चेतना जागृत करने की आवश्यकता है। डॉ. मंजुश्री वेदुला ने कहा विक्लांगता अभिशाप नहीं चुनौती है। डॉ. यदु ने विक्लांगों को समान अधिकार मिलने की आवश्यकता बताई। डॉ. अनिता सिंह ने कहा कि विक्लांगों के लिए सामाजिक सौहार्द्र की दरकार है।

इन पुस्तकों का किया गया विमोचन

डॉ. एके यदु द्वारा संपादित विक्लांग-विमर्श, मानवता का उत्कर्ष और डॉ. अनिता सिंह द्वारा लिखित विक्लांगता परक उपन्यास स्वीकरण, डॉ. विनय कुमार पाठक कृत विक्लांग विमर्श: दशा और दिशा का डॉ. गीता दोड़मणी का मराठी में अनुवादित ग्रंथ और डॉ. रामशंकर भारती की डॉ. विनय कुमार पाठक और इक्कीसवीं सदी के विमर्श का विमोचन किया गया।

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बिलासपुर (छ.ग.) (नैक मूल्यांकन 'बी' ग्रेड)

Email - gpgacc.bsp@gmail.com Website - www.gjpvpgc.in

बिलासपुर, दिनांक / /2024

—: प्रतिवेदन :—

"21वीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग विमर्श"

शासकीय जमुना प्रसाद वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) में हिन्दी विभाग द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 09.02.2024 को किया गया। संगोष्ठी का विषय "21वीं सदी का अस्मितामूलक विकलांग विमर्श" था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला प्राध्यापक हंसराज कॉलेज दिल्ली अति विशिष्ट अतिथि के रूप डॉ. विनय कुमार पाठक, कुलपति थावे विश्वविद्यालय गोपालगंज पटना, बिहार, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् बिलासपुर, विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यायामूर्ति चन्द्रभूषण बाजपेयी (पूर्व न्यायाधीश) छ.ग. उच्च न्यायालय, डॉ. सुरेश महेश्वरी (पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी अनुसंधान केन्द्र प्रताप महाविद्यालय अमलनेर महाराष्ट्र, डॉ. रामशंकर भारती सेवा निवृत्त प्राचार्य एवं प्रख्यात समीक्षक झांसी, श्री मदनमोहन अग्रवाल, राष्ट्रीय महाविद्यालय अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् बिलासपुर एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हमारे संस्था प्रमुख डॉ. श्यामलाल निराला एवं उड़ीसा ने पधारी, डॉ. मंजुश्री बेदुला, हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री शुक्ल एवं पूरा महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ देवी सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण से प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात् राजगीत कु. प्रिया बी.ए. भाग–तीन ने प्रस्तुत किया। इस समारोह में डॉ. ए. के. यदु द्वारा संपादित किताब– 'विकलांग–विमर्श मानवता का उत्कर्ष' डॉ. अनिता सिंह द्वारा लिखित विकलांगता परक उपन्यास स्वीकरण तथा विनय कुमार पाठक कृत किताब 'विकलांग विमर्श दशा और दिशा' तथा कोल्हापुर विश्वविद्यालय की सहायक प्राध्यापक डॉ. गीता दोडमणी द्वारा मराठी में अनुदित ग्रंथ का विमोचन भी किया गया।

अति विशिष्ट अतिथि की आसंदी से उद्‌बोधन देते हुए डॉ. सुधांशु शुक्ला जी ने हिन्दी के भक्ति कालीन महाकवि 'सूर' को लक्ष्य किया और बताया कि सूर ने अपने बंद आखों से जिस तरह वात्सल्य व श्रृंगार का चित्रण किया है वह आंख वालों के लिए भी दुर्लभ है। इसीलिए हिन्दी में 'सूर' श्रृगांर रस के सम्राट माने जाते हैं। अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् के महासचिव डॉ. मदन मोहन अग्रवाल जी ने विकलांग चेतना परिषद् के उद्‌देश्य व उनके कार्य शैली पर प्रकाश डाला तथा बीज वक्ता के रूप में डॉ. विनय कुमार पाठक ने बताया कि विकलांगों के प्रति समाज में उपेक्षा का भाव आज से नहीं आदि काल से चला आ रहा है। विकलांग विमर्श के माध्यम से इस भावना में बदलाव आये, उन्हें भी समाज में गरिमामय सम्मान मिले तथा स्वम् विकलांग व्यक्ति भी अपनी वर्तमान अवस्था से संतुष्ट न रहे, उनमें भी आत्मबल जागृत हो, वे पुरूषार्थ कर बड़ा से बड़ा लक्ष्य प्राप्त कर सकते है निःशक्त जन अशक्त नहीं है एक विकलांग व्यक्ति किसी भी तरह सकलांग से कम नहीं दुनिया भर में हरवर्ष 03 दिसम्बर को अर्न्तराष्ट्रीय विकलांग दिवस मनाया जाता है। इसके उपरांत विशिष्ट अतिथि डॉ. सुरेश महेश्वरी ने बताया कि

विकलांगों को नवजीवन देने एवं समाज की मुख्य धारा में शामिल कर उन्हें प्रतिगामी बनाने में विकलांग विमर्श की भूमिका महत्वपूर्ण होती ह। प्रायः यह देखा जाता है कि यदि ईश्वर किसी से कुछ छीनता है तो उसे वह बदले में कुछ और प्रदान कर देता है। जो व्यक्ति उस कुछ 'और' को पहचान लेता हैं उसका जीवन सहज और सुगम हो जाता है। डॉ. रामशंकर भारती ने बताया कि प्रोत्साहनों और विमर्शों ने भी विकलांगों की दुनियाँ बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, कभी लोगों ने निःशक्तजनों में सशक्तता का उत्थान प्यार दुलार से समझा बुझाकर किया है तो कभी उनके मर्म स्थल पर प्रहार करके।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में संस्था के प्राचार्य डॉ. श्यामलाल निराला जी ने बताया कि विकलांगता दुःख की जननी है लेकिन इस सत्य को न स्वीकार करते हुए उसने दूर भागना कायरता है, उसका डटकर सामना करना पुरूषार्थ है शरीर भले ही विकलांग हो परन्तु मन तो ऊर्जा का केन्द्र है इसलिए अपने मन को केन्द्रित करने की आवश्यकता है। प्रथम तकनीकी सत्र में न्यायमूर्ति चन्द्रभूषण बाजपेयी जी ने विकलांगों के कानूनी अधिकार पर प्रकाश डाला एवं कुछ शोधार्थी छात्र/छात्राओं ने काव्य पाठ किया। द्वितीय तकनीकी सत्र् में कुछ विकलांग छात्र/छात्राएँ उपस्थित रहे जिन्होंने अपने जीवन के दिशा–निर्देश एवं कार्य प्रणाली पर प्रकाश डाला जो निश्चित रूप से सराहनीय रहा। अंतिम सत्र में कुछ शोध वाचकों ने अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए एवं प्रमाण–पत्र वितरण का कार्य सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में डॉ. परमजीत पाण्डेय द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया एवं मंच संचालन की महती भूमिका डॉ. फेदोरा बरवा के द्वारा सम्पन्न हुआ और पूरा महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

(डॉ. श्यामलाल निराला)
प्राचार्य
शासकीय जेपी वर्मा स्नातकोत्तर
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. जयश्री झुला
संयोजक